अश्वघोष

आम आदमी	भाव कुछ अपवाद के
व्यर्थ जा रही सारी अटकल कितना बेबस, कितना बेकल आम आदमी मन में लेकर सपनों का घर खड़ा हुआ है चौराहे पर चारों ओर बिछी है दलदल कैसे खोजें राहत के पल आम आदमी तन में थकन नसों में पारा कंधों पर परिवार है सारा कहां जा रहा मेहनत का फल? सोच–सोच कर होता दुर्बल आम आदमी उखड़ी–उखड़ी सांस ले रहा संसद को आवाज दे रहा मीलों तक पसरा है छल–बल बार–बार होता है निष्फल आम आदमी।	लड़खड़ाये शब्द फिर अनुवाद के भोर के दिल में अनोखी धुंध है धूप का भी व्याकरण अब कुंद है जुड़ गये हैं भाव कुछ अपवाद के शीत में इक अग्निवर्णी घाम है शान्ति में भी हर तरफ कोहराम है होंठ सूखे जा रहे अवसाद के देखली हमने शरारत शूल की पसलियां हैं रक्तरंजित फूल की टूटकर सपने गिरे आल्हाद के लड़खड़ाये शब्द फिर अनुवाद के।
	सम्पर्क– 7, अलकनंदा एनक्लेव जनरल महादेव सिंह रोड, देहरादून